अक्रम यूथ

अक्टूबर 2019 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

The Augmented Reality Magazine

For details, visit page **24**

अनुक्रमणिका

04	पैसा.... पैसा... पैसा...	कर्मफल	14
06	दादाश्री के पुस्तक की झलक	ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा	16
08	चलो करें कुछ ऐसा भी	पैसे का उपयोग	18
10	Q & A	करें प्लानिंग	20
12	पैसे का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ करते हैं?	कविता	23

अक्टूबर 2019
वर्ष : 7, अंक : 06
अखंड क्रमांक : 78

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription
Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2019, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

लक्ष्मी : दादा के शब्दों में कहें, तो हमारा। ग्यारहवाँ प्राण।

दोस्तों, पैसों के फायदे की बात सुनते ही कैसी चेतना आ जाती है। जीवन की ज़रूरतों को पूरी करने के लिए बहुत ही आवश्यक ऐसी लक्ष्मी किसे नहीं चाहिए? ज़रूरतें पूरी करने के बाद सुख-सुविधाएँ, वैभव या मौज़-शौक के लिए या ज़रूरत से ज्यादा साधनसामग्री बसाने के प्रयत्न करते हैं, जिसके फल स्वरूप पैसों का फालतू व्यय या दुरुपयोग करते हैं। समय के साथ-साथ ये चीज़ें जीवन की ज़रूरतें लगने लगती हैं और इन्हें पूरा करने के लिए परिश्रम करते हैं। एन्डलेस (अंतहीन) साइकल शुरू हो जाती है : कमाना, खर्च करना, कमाना, बचत करना वगैरह... वगैरह।

लेकिन वास्तव में जीवन व्यवहार में लक्ष्मी का आदर्श उपयोग इस तरह से करना चाहिए कि कभी कोई कार्य में रुकावट न आए और उसका सदुपयोग हो सके ताकि इस जनम में हमारी उन्नति हो सके और अगले जनम की भी सेफ्टी हो सके। दान देना पैसों का उत्तम सदुपयोग है जिसके विविध प्रकारों पर विशेष लेख दादा की वाणी में यहाँ प्रस्तुत है। पैसा-कमाई का प्लानिंग करके, दुरुपयोग रोककर हमारी अधोगति टाल सकते हैं और सदुपयोग करके "काम निकाल" सकते हैं।

इस बार का अंक सभी के लिए बहुत उपयोगी रहेगा ऐसी आशा से यहाँ पैसों का दुरुपयोग, उपयोग और सदुपयोग के बारे में विविध प्रकार से रोचक समझ दी गई है। तो दोस्तों, चलो इस अगत्य के मुद्दे को समझें-इस अंक का मज़ा ले।

-डिम्पल मेहता

पैसा...
पैसा...
पैसा...

पैसों से जुड़ी हुई कई कहावतें हमने सुनी हैं जैसे कि "**पैसा मेरा परमेश्वर और मैं पैसे का दास**" "**पैसा बोलता है**" वगैरह। ये सभी कहावतें जीवन में पैसों के महत्व को दर्शाती है। लेकिन क्या जीवन में पैसा ही सर्वस्व है? "नहीं।" जीवन में पैसा सर्वस्व नहीं है, लेकिन ज़रूरी तो है ही।

पैसों की ज़रूरत क्यों है? मनुष्य की मुख्य ज़रूरतें खाना, कपड़ा और रहने के लिए मकान, इन सभी के लिए पैसों की ज़रूरत है। शिक्षा, आरोग्य और घूमने-फिरने के लिए भी पैसे चाहिए। वाहन खरीदी, मौज़शौक वगैरह भी पैसों से ही कर सकते हैं। इनके अलावा अन्य कई चीज़ जैसे कि टी.वी., फ्रिज, वोशिंग मशीन, ए.सी., फर्निचर, मोबाइल, वगैरह... इतनी सारी चीज़ें उपलब्ध है कि इन्हें खरीदने के लिए ढ़ेर सारे पैसे भी कम पड़ेंगे। किसी की मदद या सत्कार्य के लिए दान देने के लिए भी पैसे ज़रूरी है और कुसंग-व्यसन में भी पैसे बिगाड़ते हैं। फिर खर्च के अलावा बचत करना भी ज़रूरी है ताकि आकस्मिक संयोगों या बिमारी के समय काम आ सकें। यों पैसों की ज़रूरत इतनी ज्यादा है कि मत पूछो!

पैसे चाहे जितने भी ज़रूरी हों लेकिन उसका उपयोग सदुपयोग और दुरुपयोग के बीच की भेदरेखा समझना हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। खुद की ज़रूरतों के लिए खर्च करे, वह पैसों का उपयोग। खराब या गलत कार्यों में खर्च करें, वह पैसों का दुरुपयोग। सत्कार्य या अच्छे भाव से खर्च करे, वह पैसों का सदुपयोग। पैसों का दुरुपयोग गलत राह पर चला कर अधोगति की ओर ले जाएगा जबकि पैसों का सदुपयोग सुख, शांति एवं उन्नति देगा और उर्ध्वगति की ओर ले जाएगा। हमारे और हमारे परिवारजनों द्वारा मेहनत से कमाए गए पैसों का दुरुपयोग न हो और सदुपयोग हो, इसकी समझ मिले, ऐसे आशय से यह अंक "पैसों का सदुपयोग" साझा क्रिया है।

दादाश्री के पुस्तक की झलक

पैसों का सदुपयोग यानी क्या??

पाँचवा हिस्सा परायों के लिए

प्रश्नकर्ता : अगले जनम के पून्य उपार्जन के लिए इस जनम में क्या करना चाहिए?

दादाश्री : इस जनम में जो पैसे आएँ उसमें से पाँचवा हिस्सा भगवान के मंदिर में रख देना चाहिए। पाँचवा हिस्सा लोगों के सुख के लिए खर्च करना चाहिए। यानी उतना तो वहाँ ओवरड्राफ्ट पहुँच गया। अभी पिछले जनम का ओवरड्राफ्ट भोग रहे हैं। इस जन्म का पून्य बाद में आएगा। अभी की कमाई आगे काम आएगी।

दान का प्रवाह

चार प्रकार के दान है।

1) आहार दान, 2) औषध दान, 3) ज्ञान दान और 4) अभय दान।

पहला आहार दान

पहले प्रकार का दान है अन्नदान। इस दान के बारे में तो ऐसा कहा गया है कि भाई, हमारे घर पर कोई व्यक्ति आया हो और कहे, "मुझे कुछ दें, मैं भूखा हूँ।" तब कहना चाहिए, "बैठ जाओ यहाँ खाना खाने।" यह है आहार दान। फिर हमें कल के बारे में नहीं सोचना चाहिए कि कल वह क्या करेगा? कल भी उसे मिल ही जाएगा। आपके यहाँ आया है तो आपसे जो बन पड़े वह उसे दें। आज के लिए तो जीवित रहा, बस! फिर कल उसके उदय में कुछ और होगा आपको फिकर करने की ज़रूरत नहीं है।

औषध दान

और दूसरा है औषध दान। यह आहार दान से उत्तम माना जाता है। औषध दान से क्या होगा? सामान्य स्थिति का कोई व्यक्ति बिमारी के कारण अस्पताल गया हो और वहाँ किसी से कहे कि "अरे, डॉक्टर ने कहा है लेकिन दवाई लेने के लिए पचास रुपये मेरे पास नहीं है तो दवाई कैसे लाऊँ? तब हमें कहना चाहिए कि "ये पचास रुपये दवाई के और दस रुपये और रख लो या हमें कहीं से दवाई लाकर उसे मुफ्त में दे देनी चाहिए। हमारे पैसों से दवाई लाकर उसे मुफ्त में दे देनी चाहिए। दवाई खाएगा तो वह बेचारा चार-छ सालों तक जीएगा। औषध दान को आहारदान से कीमती माना गया है क्योंकि इससे व्यक्ति दो महीने और जीवित रहेगा। व्यक्ति को ज्यादा समय के लिए जीवित रखकर वेदना से थोड़ी बहुत राहत दिलाएगा।

उच्च है ज्ञानदान

उससे भी आगे है ज्ञानदान। ज्ञानदान में पुस्तकें छपवाना, लोगों को समझाकर सही रास्ता दिखाना और लोगों का कल्याण हो ऐसी पुस्तकें छपवाना, ये सब ज्ञानदान है। ज्ञानदान देने से अच्छी गतियों में, उच्च गतियों में या मोक्ष में भी जा सकते हैं।

सर्वोच्च है अभयदान

और चौथा है अभयदान। किसी भी जीवमात्र को तकलीफ न पहुँचे ऐसा वर्तन करना चाहिए, वह है अभयदान। किसी भी जीव को दुःख न हो, ऐसा पहले भाव रखना चाहिए फिर वह प्रयोग में आएगा। लेकिन अगर भाव ही नहीं करेंगे तो? इसलिए भगवान ने इसे उच्च दान कहा है। इसमें पैसों की कोई ज़रूरत नहीं है। यह सर्वोच्च दान है।

चलो, करें कुछ ऐसा भी...

लोक कल्याण

मेहमदाबाद के जेतर में स्थित सिद्धि विनायक मंदिर के ट्रस्टी नरेन्द्र भाई पुरोहित की माताजी डाही बा ने उनसे कहा था कि "बेटे हमारे पास इतने पैसे हैं, तो तू उनका सदुपयोग करना। पैसों का उपयोग अगर तू व्यसन मुक्त समाज बनाने में करेगा तो तेरा विकास होगा।" माताजी की बात रखते हुए नरेन्द्र भाई ने एक सुंदर मंदिर बनवाया और वहाँ व्यसन मुक्ति का एक भगीरथ कार्य शुरू करवाया।

उस मंदिर में व्यसन मुक्ति ज्योत रखी गई है, लोग वहाँ जाकर व्यसन छोड़ देते हैं। इस उमदा कार्य के लिए मंदिर द्वारा एक टीम तैयार की गई है जो गुजरात के गाँवों में जाकर व्यसन मुक्ति अभियान एवं कैम्प चलाती है और उनसे प्रतिज्ञापत्र भी लेती है।

मंदिर परिसर में व्यसन मुक्ति के लिए काम करने वाली एक एन.जी.ओ. को भी जगह दी गई है। इसके सदस्य मंदिर में आने वाले लोगों को इस बारे में समझाते हैं और विविध पोस्टरों द्वारा जानकारी देते हैं ताकि अनपढ़ लोग भी व्यसन के नुकसान से वाकेफ हो सकें।

एक तरफ जहाँ पैसों का दुरुपयोग करके लोग खुद को बुरी आदतों में डाल देते हैं, वहीं दूसरी ओर कई लोग नरेन्द्र भाई की तरह पैसों का सदुपयोग भी करते हैं। इस तरह से जो लोग जगत् कल्याण के लिए पैसों का उपयोग करते हैं वे परिवारजनों के आशीर्वाद एवं परम सुख को प्राप्त कर सकते हैं। पसंदगी अपनी है।

लक्ष्मी का दान

राजकोट में दादा भगवान की 110 वीं जन्म जयंती के समय मेरे धंधे में मंदी के बावजूद भी मैंने दान दिया था। जन्म जयंती के बाद आज तक मेरा धंधा बहुत अच्छा चल रहा है और मैंने जितने रुपये का दान दिया था उससे लगभग दस गुने मैंने कमाए हैं और वह भी सिर्फ छः महीनों में। इससे पहले भी मुझे ऐसे अनुभव हुए हैं लेकिन यह ताज़ा उदाहरण है और राजकोट के हर एक सेवार्थी ने 110 वीं जन्म जयंती में दान दिया था, उन सभी के धंधे आज तक बहुत अच्छे चल रहे हैं। दादा के काम में लक्ष्मी खर्च करने से दो फायदे हुए, एक तो लोभ की ग्रंथि टूट गई और दूसरा यह कि ओर ज्यादा लक्ष्मी आई। मैं ऐसी भावना करता हूँ कि और ज्यादा लक्ष्मी आए और दादा के काम में और ज्यादा खर्च कर सकूँ।

जय सच्चिदानंद।

- (एक महात्मा)

Q&A

प्रश्नकर्ता : पैसों का दुरुपयोग यानी क्या?

आप्तपुत्र : दादाश्री कहते हैं कि जितनी ज़रूरत हो उतने ही खर्च करने चाहिए। तुम्हारे पास दो सनग्लासीस हैं और फिर भी तुम तीसरे सनग्लासीस लो, तो उसे क्या किया कहा जाएगा?

प्रश्नकर्ता : दुरुपयोग।

आप्तपुत्र : इस तरह से कई बार हम पैसों का दुरुपयोग करते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन नई-नई ब्रान्डेड चीज़ों के बिना मुझे नहीं चलता और यह दुरुपयोग नहीं बल्कि शौक है, ऐसा लगता है... इसके लिए क्या करूँ?

आप्तपुत्र : नया-नया और ब्रान्डेड लेने में हर्ज नहीं है लेकिन जब तू कमाने लगे तब ये सब खर्चे करना।

प्रश्नकर्ता : दुरुपयोग कहाँ करता हूँ। इसका पता नहीं ही नहीं चलता। ऐसा ही लगता है कि यह मेरी ज़रूरत है। बर्थडे रहा तो पार्टी तो चाहिए ही और वह भी फ्रेन्ड्स के साथ, फैमिली के साथ पार्टी करना अच्छा नहीं लगता।

आप्तपुत्र : हाँ, ऐसा इसलिए होता है कि पूरे दिन घर में फ्रेन्ड्स के साथ नहीं रहते, इसलिए उनके बारे में अभिप्राय नहीं रहते और फैमिली के साथ रहते हैं इसलिए उनके बारे में बहुत अभिप्राय रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : मैंने हाल ही में नए कपड़े लिए लेकिन मेरे फ्रेन्ड ने और भी अच्छे कपड़े लिए तो मुझे भी ऐसे अच्छे कपड़े लेने हैं लेकिन अब पेरेन्ट्स मना कर रहे हैं।

आप्तपुत्र : तो अब नहीं लेने चाहिए। हमें उनकी परिस्थिति के बारे में भी सोचना चाहिए क्योंकि उन पर घर की ज़िम्मेदारी रहती है और हमारा मोह तो एन्डलेस रहता है। संतोष ही नहीं मिलता।

प्रश्नकर्ता : मेरे फ्रेन्ड्स सीगरेट पीते हैं और मुझसे भी कहते हैं कि "सीगरेट पीने से कूल लगते हैं और इसमें कुछ ज्यादा खर्च नहीं है बल्कि एग्ज़ाम का टेन्शन भी कम हो जाता है, ले तू भी पी।" तो मैं क्या करूँ?

आप्तपुत्र : ऐसे फ्रेन्ड्स की संगत छोड़ देनी चाहिए और कॉलेज में अच्छे फ्रेन्ड बनाने चाहिए। कोई अगर कूएँ में गिरे तो क्या हमें भी गिरना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

आप्तपुत्र : और पैसों का भी दुरुपयोग तो हुआ न! क्या अच्छी जगह पर खर्च किए हैं? नहीं। अगर फ्रेश ही होना चाहते हैं तो इसके बजाय जाकर किसी की हेल्प करो न! ठीक है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ। और मुझे रोज़ बाहर केन्टिन में फास्टफूड खाने का मन करता है।

आप्तपुत्र : बाहर का खाना अच्छा रहता है? तुझे पता है कैसी चीज़ें इस्तेमाल करते हैं, तेल के ठिकाने नहीं रहते, कपड़ों के ठिकाने नहीं रहते, पसीना टपकता है, पसीने से भरे हुए हाथों से बनाते हैं। ऐसा सब हम अपने पेट में डालते हैं, फिर हमारा क्या होगा? पेचिश जैसी बिमारियाँ ही होंगी न? खाना बनाने वाला व्यक्ति अगर झगड़कर आया हो और नेगेटिव विचारों से खाना बनाए तो ऐसा खाना खाकर हमारा क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : हमारे अंदर भी नेगेटिविटी आएगी।

आप्तपुत्र : हाँ। ये सब हमें अपने मन को बताना चाहिए।

ब्रान्डेड चीज़ें लेने में।

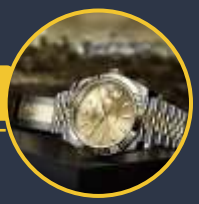

हर हफ्ते पार्टी करने में।

व्यसन - तम्बाकू, सीगरेट वगैरह।

चीज़ें और पुरानी पुस्तकें चलें ऐसी होने के बावजूद भी नई खरीदने में।

थिएटर में बार-बार पिक्चर देखने में।

ज्यादा पैसे देकर भी जहाँ फ्रेन्ड्स ट्यूशन जाता है वहीं ट्यूशन जाने में।

पढ़ाई के लिए कोई कोर्स शुरू करके उसे पूरा नहीं करने में।

पैसों का
कहाँ-कहाँ

हमने कई सारे
सवाल पूछा कि
का दुरुपयोग
करते हैं?" औ
कुछ ऐसा

दुरुपयोग
ं करते हैं?

यूथ से यह
"आप पैसों
कहाँ-कहाँ
ैर उन्होंने
कहा :

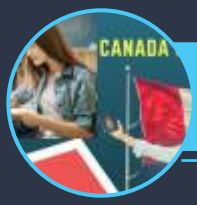

अपने देश में अच्छे स्टडी कोर्स होने के बावजूद भी समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए विदेश में पढ़ाई करने में।

लोंग ड्राइव पर जाकर पेट्रोल बिगाड़ने में।

होटल जाकर ज़रूरत से ज्यादा ऑर्डर देकर खाना झूठ छोड़ने में।

शेरबाज़ार या अन्य तरह से जुआ खेलने में।

महंगे और लेटेस्ट मोडल के मोबाइल फोन खरीदने में।

पैसे नहीं हो फिर भी खुद का बाइक लेने के लिए लोन पर खरीदने में।

दोस्तों, ऐसे कई तरह से हम जाने-अन्जाने पैसों का फालतू खर्च करते हैं। आप भी अपने पैसों का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ करते हैं, उसका लिस्ट बनाकर उसे रोक सकते हैं।

कर्मफल

अरवल्ली गिरिमाला जयपुर नगर में जयकेशी राजा राज करता था। उनका पूत्र जयनाक विविध प्रकार के व्यसनों में चकचूर रहता था इसलिए राजा ने उसको देश निकाला दिया था।

अरवल्ली की गिरिमाला के भीलों के साथ से वह लूटेरा बन गया। और फिर लूटेरों का सरदार बन गया। चोरी, लूटमार, हिंसा उसके जीवन का हिस्सा बन गए थे। एक बार नरवीर नाम का धनवान व्यापारी व्यापार करने निकला था। जयताक को इसका पता चलते ही उसने उस व्यापारी को लूट लिया। अपनी संपत्ति वापस लेने के लिए व्यापारी ने मालवा देश के राजा से निवेदन किया, फिर राजा की सेना ने लूटेरों के निवास पर हमला कर दिया जिसमें ज्यादातर लूटेरे मर गए लेकिन जयताक जान बचाकर भागने में सफल हो गया।

जयताक आँध्रा के उरगाबा शहर में पहुँचा। खाने-पीने का प्रबंध नहीं होने के कारण ओधारा नाम के व्यापारी के सेवक के तौर पर नौकरी करने लगा। वहाँ एक बार उसे आचार्य श्री यशोभद्र मिले, उनके धार्मिक प्रवचन सुनकर जयताक धर्म की ओर मुड़ गया।

एक बार किसी प्रसंग में सभी लोगों को जैन मंदिर में भगवान महावीर की उपासना, पूजा-अर्चना करते देखकर जयताक ने सोचा कि "ये लोग वास्तव में बहुत भाग्यशाली है कि ये जिनेश्वर की बहुत अच्छी तरह से आराधना कर पा रहे हैं। मेरे पास भी अगर ज्यादा पैसे होते तो मैं भी बहुत आराधना करता।" ऐसा सोचकर उसने जुए में जीते हुए नौ सिक्कों से अट्ठारह फूल खरीदे और भगवान जिनेश्वर की बहुत भाव से पूजा-आराधना की।

मृत्यु के बाद जयताक के जीव का कुमारपाल के तौर पर पुनर्जन्म हुआ। जो गुजरात के राजा बने और जिनेश्वर भगवान के बहुत बड़े भक्त बने। पिछले जन्म में नौ सिक्को से अट्ठारह फूल खरीदकर भगवान के चरणों में अर्पित किए थे उसके फल स्वरूप वे अट्ठारह राज्य के अधिपति बने।

एक बार महाराज कुमारपाल ने अपने आचार्यश्री से पूछा, "हे प्रभु! जगत् में मेरा यश कैसे फैलेगा? और काल के अंत तक कैसे रहेगा? तब आचार्य महाराज ने कहा, "या तो सोमनाथ महादेव के मंदिर का जीणोद्धार करें या विक्रम राजा की तरह पृथ्वी पर से मनुष्य मात्र का कर्ज़ दूसरा करें।"

सौराष्ट्र में समुद्रतट पर बनाया गया सोमनाथ पाटण का मंदिर लकड़ी का था। समुद्र के नमकीन पानी से वह जीर्ण हो चूका था। महाराजा कुमारपाल ने जीणोद्धार कराके पूरा मंदिर पत्थर से बनवाया। लोगों ने कुमारपाल राजा की उदारता की बहुत प्रशंसा की। उनका कैसा सर्वधर्म समभाव!

उन्होंने अपना पूरा जीवन धर्म एवं अहिंसा के लिए व्यतीत किया और लोक कल्याण के लिए पैसों का सदुपयोग किया। इसके फल स्वरूप अगले जनम में राजा कुमारपाल आने वाली चौबीसी के पहले तीर्थंकर पद्मनाभ प्रभु के गणधर बनेंगे।

ज्ञानी
आश्चर्य की प्रतिमा

एक महात्मा की बात है। उनकी आर्थिक परिस्थिति बहुत खराब थी और उनके यहाँ मुंडन का प्रसंग था। उनके परिवार के रीति-रिवाजों के अनुसार मुंडन के प्रसंग में एक शादी जितना खर्च होने वाला था।" घर में पैसे भी नहीं है और मुंडन का इतना बड़ा खर्चा कैसे करेंगे?" यह विचार से वे परेशान थे। ऐसे में उनकी नीरू माँ से मुलाकात हुई और बताया कि उनकी परिस्थिति ऐसी नहीं है कि मुंडन का खर्च उठा सके और व्यवहार भी अच्छा निभा सके। नीरू माँ ने कहा, "अगर आपको हर्ज नहीं हो तो उसकी बुआ बनकर मैं चोटी काट दूँ?" महात्मा ने कहा, "आज तो हम धन्य हो गए, आपने मेरी परेशानी दूर कर दी। यों भी पैसों की तकलीफ है और अगर कर्ज़ लेकर खर्च करेंगे तो भी पीछे से लोग कुछ न कुछ तो बोलेंगे ही।"

"शाम को इसका मुंडन करवाकर यहाँ ले आना और साथ में उसके पसंद की खाने की चीज़ और मेरे लिए सुखड़ी ले आना।"

फिर नीरू माँ ने डिम्पल भाई से कहा, "मुझे कैंची दे।" और महात्मा के तो खुशी से रोंगटे खड़े हो गए।

उन्हें ऐसा लगा था कि नीरू माँ तो यों ही कह रहे हैं लेकिन नीरू माँ ने तो कैंची लेकर सच में ही बच्चे की चोटी काट दी। उन महात्मा को तो अहो! अहो! हो गया। उन्होंने कहा कि, "नीरू माँ आपने तो हमें धन्य कर दिया।" फिर तुरंत नीरू माँ ने कहा कि "शाम को इसका मुंडन करवाकर यहाँ ले आना और साथ में उसके पसंद की खाने की चीज़ और मेरे लिए सुखडी ले आना।" वे महात्मा तो बहुत खुश हो गए।"

फिर तो वे शाम होने की राह देखने लगे कि, "कब शाम हो और कब नीरू माँ के पास जाऊँ।" शाम होते ही वे महात्मा कंकावटी(कुमकुम की डिब्बी) सुखडी और खाने की अन्य चीज़ें लेकर नीरू माँ के पास पहुँच गए और कहा, "नीरू माँ, आपने इसकी चोटी काटी अब स्वस्तिक भी आप ही कर दें।" नीरू माँ ने स्वस्तिक बना दिया और "जगत् कल्याण कर और आप्तपुत्र बन....।" ऐसे आशीर्वाद भी दिए। उन महात्मा को बहुत अहो भाव हुआ।

कुछ समय पश्चात् अपने दूसरे बेटे के मुंडन के पास आए। नीरू माँ ने चोटी काटकर दोनों भाईयों को आशीर्वाद दिया।

यों नीरू माँ ने उन्हें सदियों से चले आ रहे रीति-रिवाजों के खर्च, बोझ और प्रथा से मुक्त कर दिया।

पैसों का उपयोग

गवर्मेन्ट जोब : के बारे में तो आप जानते ही होंगे। चाहे जब ट्रान्सफर हो सकता है और एक शहर से दूसरे शहर जाना पड़ सकता है। पापा का ट्रान्सफर होने की वजह से राहिल को भी मुंबई से पूना जाना पड़ा। राहिल की कॉलेज की पढ़ाई पूना में ही शुरू हुई। कॉलेज के पहले दिन ही वह शिवम् सावन भौमिक और जैमिन से मिला और कुछ ही दिनों में उनके बीच अच्छी दोस्ती हो गई। ये पाँचों दोस्त हमेशा साथ ही रहते थे।

राहिल का बर्थडे था और उसके सभी दोस्तों ने फाइव स्टार होटल में बर्थडे मनाने का तय किया राहिल के पास उतने पैसे नहीं थे कि वह फाइव स्टार होटल में पार्टी दे सके। उसने इस बारे में जैमिन, भौमिक और सावन को बताना चाहा लेकिन वे लोग तो बहुत पैसे वाले हैं। मैं गरीब हूँ या मैं कंजूस हूँ ऐसा सोचकर वे मुझसे दोस्ती नहीं रखेंगे तो?" इस डर से रक्षाबंधन में बहन को गिफ्ट देने इकट्ठे किए हुए पैसे उसने बर्थ डे पार्टी में खर्च कर दिए। जब होटल में सब मनचाहे खाने का ऑर्डर दे रहे थे तब राहिल का मन हर एक व्यंजन के कितने पैसे लगेंगे उसका हिसाब लगा रहा था। जब बहुत सारा खाना बच गया तब उसे बहुत पछतावा हुआ कि उसके बचाए गए पैसे इस तरह से व्यय हो गए। रक्षाबंधन के दिन बहन ने राखी बाँधी तब बहन के चेहरे पर आनंद था और आँखों में चमक थी कि "मेरा भाई मेरे लिए

> जहाँ पैसों का दुरुपयोग हो रहा हो तो कोई न कोई बहाना बनाकर वहाँ से बचने लगा।

क्या लाया होगा? लेकिन अपनी बहन को देने के लिए राहुल के पास कुछ भी नहीं था इसलिए उसे बहुत दुःख हुआ। वह ध्यान रखने लगा कि ऐसी गलती फिर से न हो और जहाँ पैसों का दुरुपयोग हो रहा हो तो कोई न कोई बहाना बनाकर वहाँ से बचने लगा।

फिर एक दिन पता चला कि उसके पापा को प्रमोशन मिला है और दिल्ली ट्रान्सफर हो गया है। बाकी की पढ़ाई के लिए राहिल को दिल्ली जाना पड़ा। पुराने दोस्त छूट गए। नई कॉलेज में पहले ही दिन उसने सोच लिया कि अब मैं ऐसे दोस्त बनाऊँगा जिनसे मुझे पैसों के लिए झूठ न बोलना पड़े और न ही खर्च के लिए बहाने बनाने पड़े।

दो-तीन दिनों में ही राहिल की पहचान सागर से हुई। उसने कहा कि वह और उसके अन्य छः दोस्त मिलकर अपने सेविंग्स और पोकेटमनी से अनाथ बच्चों के लिए "अभ्यास" नाम का एक एन.जी.ओ. चलाते हैं। राहिल की इच्छानुसार पैसों का सदुपयोग करने वाले दोस्त उसे मिल गए। कुछ ही समय से वह इस ग्रुप से जुड़ गया और जब-जब वह किसी अनाथ बच्चे के चेहरे पर स्मित देखता तब उसे अपने किए गए पछतावे पर गर्व महसूस होता। सिर्फ उस पछतावे के कारण ही उसे अच्छे दोस्त और पैसों के सदुपयोग का संतोष और आनंद मिला था।

यों राहिल पैसों का सदुपयोग करना सीख गया और पैसों का व्यय करके गलत राह पर जाने से बच गया।

करें प्लानिंग

ज्यादातर लोग पैसों का व्यवहार पोकेटमनी से शुरू करते हैं।

पैसों की ज़िम्मेदारी लेने का एक तरीका यह है कि किसी खास कार्य के लिए अपना बजट सेट करना। हर महीने के लिए चौक्कस रकम तय करना। ये पैसे अगर हम कपड़े, इलेक्ट्रोनिक आइटम्स् या बिनज़रूरी चीज़ों में खर्च कर दे और जब ज़रूरत हो तब केन्टिन में नास्ता करने के लिए या रीक्षा-टैक्सी के लिए पैसे नहीं हो, तब हमें सीख मिलती है कि हमने गलत जगह पर खर्च कर दिए।

हमारे पास पैसे कम हों और हम ज़रूरत से ज्यादा खर्च कर दें तो हम पर कर्ज़ हो जाएगा। बचत की महत्वता समझकर हमें पुसाए वैसी चीज़ें ही खरीदनी चाहिए। बिनज़रूरी खर्च कर देने से ऐसा भी हो सकता है कि जब हमें वास्तव में पैसों की ज़रूरत हो तब हमारे पास अन्य कोई विकल्प ही न रहे। पैसों के संचालन के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण सीख है।

एक संशोधन के अनुसार सोलह से इक्कीस साल के बीच के हर दस में से आठ युवाओं में मोबाइल का अचानक से बिनज़रूरी खर्च देखा गया है, जिनका यह मानना था कि वे अपनी आमदनी और खर्च का ठीक से हिसाब रखते हैं। इनमें से कई युवाओं को इस खर्च के लिए मम्मी-पापा की भी मदद लेनी पड़ी थी।

पैसों के बिनज़रूरी खर्च को रोकने के लिए हम अगर पूरे दिन में खर्च किए गए पैसों का हिसाब रखें और प्लानिंग करें तो पैसों का व्यय रोका जा सकता है।

Money Manager : Expense Tracker, Free Budgeting App

पैसों के खर्च का प्लानिंग करने का एक तरीका यह है कि "ऊपर दिखाए गए अनुसार कई उपलब्ध है।" जिनके उपयोग से बिनज़रूरी खर्च कम करके बचत कैसे करें यह जान सकते हैं। अगर ऐसा न कर पाएँ तो बुक या डायरी में भी हिसाब लिख सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर मम्मी ने 1000 रुपये दिए हैं तो हम रोज़ का खर्च डायरी में लिख सकते हैं।

1000 - मम्मी ने दिए

45 - फ्रेन्डस् को वडापाऊ खिलाए

30 - सोडा पी

50 - ट्रावेलिंग के लगे

100 - बुक ली

250 - पिक्चर की टिकट ली

300 - लाइब्रेरी की मेम्बरशिप की भरी वगैरह।

इस तरह से अगर हम खर्च और आमदनी बुक-डायरी में लिखेंगे तो भी ऑटोमैटिक प्लानिंग होने लगेगी और हमें पता चलेगा कि पैसों का व्यय कहाँ-कहाँ हो रहा है और प्लानिंग करके हम उसे रोक सकेंगे।

Visit...
http://tiny.cc/AY-podcast

Listen to the Podcast of Akram Youth Magazines. Enjoy this magazine in Radio Jockey (RJ) style.

#कविता

ज़रूरत थी या नहीं, लेकिन पापा के पैसे खर्च किए ही....
उन्हें दुःख देकर भी, हमने हमारी जिद पूरी की ही....

सब के साथ बाहर खाना खाने जाना पड़े, ऐसा रिवाज़ है....
वर्ना बहुत ही अच्छा, मेरी मम्मी के हाथ का भी स्वाद है....

मम्मी-पापा अपनी ज़रूरतों पर काट-छाट करते हैं...
क्योंकि बच्चे कहाँ अपने शौक पर काबू करते हैं....

उन्हें चीज़ों पर महंगा एक टेग चाहिए...
नहीं... अच्छी चीज़ नहीं, दोस्तों जैसा स्वेग चाहिए....

कई बार कई चीज़ें यों ही ले आते हैं....
जो उसके काम की नहीं, ऐसी पस्ती ले आते हैं...

कमाते नहीं है जो वे यों पैसे उड़ाते हैं....
नासमझी से किसी के नहीं, खुद के ही पुन्य गँवाते हैं...

काल का प्रभाव है और लक्ष्मी गटरों में जा रही है...
वर्ना एक सुख बताओ, जो हमेशा के लिए रख सकते हैं....

लक्ष्मीजी आई है तो उनका सदुपयोग करना चाहिए...
थोड़ा! किसी को देकर बाकी का सात्विक भोग करना चाहिए....

अक्टूबर 2019
वर्ष : 7, अंक : 06
अखंड क्रमांक : 78

For A Harry Potter Magazine like experience of

Akram Youth

Step 1: Download Akram Youth AR App

Step 2: View this magazine through the App

For details, watch the intro video in the app.

http://tiny.cc/akramyouthar

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.